2/11/20 पाठ-12 कैदी और कोकिला

4- काली तू - - - - - - -बोलो तो!

भावार्थ :- कवि कहता है कि हे कोयल! जिस प्रकार रात का रंग काला है, वही काला रंग तुम्हारा भी है। अंग्रेजों का बर्ताव भी नितांत काला अर्थात अमानवीय है। उनका यह व्यवहार मेरे मन में कई तरह की भयंकर कल्पनाएँ भर देता है। बुरी-बुरी कल्पनाएँ एवं विचार लहर के समान इस काली अँधेरी कोठरी में घूमते रहते हैं। मेरी काल-कोठरी का वातावरण भी नितांत कालिमा युक्त अर्थात रोशनी विहिन है। कैदियों को दी जाने वाली टोपी भी काली है और कंबल भी काला है। यहाँ तक कि मेरा शरीर जिन लोहे की जंजीरों से बँधा है, उनका रंग भी काला है अर्थात कारागार भी और प्राकृतिक वातावरण सभी कालिमायुक्त हैं। इस अंधकारमय, कालिमायुक्त वातावरण में पहरेदार की भीषण आवाज़ किसी सर्पिणी के डसने जैसा भय उत्पन्न कर रही है।

हे सखी! इस अंधकारमय, अन्याय से भरे वातावरण में अंग्रेजी सैनिकों द्वारा दी जाने वाली असभ्य गालियाँ इसे और भयानक बना रही हैं। कवि कहता है कि ऐसे अन्यायपूर्ण एवं अमानवीय वातावरण में भी काले सागर रूपी विपत्ति अर्थात अंग्रेजी हुकूमत से लोहा लेने का उत्साह निरंतर बढ़ता जा रहा है।

प्रबल इच्छा हो रही है कि इस काले सागर रुपी संकट को जल्द-से-जल्द नष्ट कर दिया जाए। हे कोयल! बोलो तो यह विचार कैसा है? तुम अपनी माधुर्यपूर्ण स्वर-लहरी अर्थात गीतों को

DATE: / / 20
PAGE No

क्यों लहरा रही हो? क्या तुम भी इस अंग्रेजी हुकूमत से लोहा लेने का मन बना चुकी हो। हे कोयल! सच-सच बताओ।

5- तुझे मिली - - - - - - - - बोलो तो!

भावार्थ :- कवि कहता है कि हे कोयल! तुम तो प्रकृति के स्वच्छंद हरे-भरे वातावरण में उन्मुक्त विचरण करती हो अर्थात तुम्हें तो बैठने के लिए हरी-भरी डाली मिली है, परंतु मेरे भाग्य में यह संकरी-सी काल कोठरी है, जहाँ हवा और रोशनी बड़ी मुश्किल से पहुंचते हैं। हे कोयल! संपूर्ण आकाश तुम्हारा क्षेत्र है जहाँ तुम निर्बाध रूप से उड़ सकती हो, जबकि मैं जिस काल-कोठरी में बंद हूँ, यह मात्र दस मुट की ही है। हे कोयल! तेरे गीत सभी की प्रशंसा के पात्र होते हैं, परंतु यदि मैं अपनी दुर्दशा पर रोना चाहूँ तो यह अपराध की श्रेणी में गिना जाएगा।

हे कोयल! तुम स्वयं देख लो कि तुम्हारी और मेरी स्थिति में कितना अंतर है? तब भी तुम अंग्रेजी शासन के विरुद्ध युद्ध का संगीत बजा रही हो। हे कोयल! यह बताओ कि तुम्हारी इस हुंकार पर मैं क्या कर सकता हूँ? इस काल-कोठरी में रहकर मैं अपनी रचनाओं-कविताओं के द्वारा ऐसा और क्या विशेष करूं कि स्वतंत्रता-संघर्ष की अग्नि और अधिक धधक उठे। हे कोयल! तुम्हीं बताओ कि महात्मा गांधी के इस स्वतंत्रता आंदोलन के लिए मैं अपने प्राण-रस किस भाँति न्योछावर कर सकता हूँ तुम बताओ कोयल! मेरे संघर्ष की दिशा क्या होगी! मैं इसके लिए सहर्ष तैयार हूँ।